क्षे.शि.सं. भोपाल में कलाओं एवं हस्तकलाओं के स्त्रोत केंद्र का निर्माण

Development of Arts and Craft Resource Centre at Regional Institute of Education, Bhopal

Programme Report

वर्ष : 2024-2025 | PAC: 23.21

कार्यक्रम समन्वयक

डॉ. सुरेश मकवाना

विभागाध्यक्ष, भाषा एवं सा. शि. विभाग(DESSH)

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली

श्यामला हिल्स भोपाल (म.प्र.)-462002

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल

कलाओं एवं हस्तकलाओं के स्रोत केन्द्र का निर्माण

Development of Arts and Craft Resource Centre at Regional Institute of Education, Bhopal

वर्ष- 2024-2025

PAC- 23.21

कार्यक्रम समन्वयक

डॉ. सुरेश मकवाना

सह-प्राचार्य एवं अध्यक्ष,

सामाजिक विज्ञान एवं भाषा शिक्षा विभाग (DESSH)

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, NCERT, नई दिल्ली

श्यामला हिल्स भोपाल-462002(म.प्र.)

प्राचार्य संदेश

कला और शिक्षा अब इतने परिष्कृत और विशिष्टीकृत हो चुके हैं कि जीवन के सामान्य कार्यकलापों में उनकी जड़ें खोजने के बजाय हम प्राय: बिना प्रमाण के उन्हें ज्यों का त्यों स्वीकार कर लेते हैं। लेकिन अगर सामाजिक विकास के गहरे संबंधों और कला और खिलौने के नजदीक रिश्तों को समझना है तो इस पर हमें कुछ अधिक चिंतन करना होगा और इस क्षेत्र में जाँच शुरू करते ही हम पाते है कि कला का आरंभ मानव की गैर-कलात्मक गतिविधियों में छिपा पड़ा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अनुसार भारतीय संस्कृति की एक खासियत है कि लगातार तेजी से हो रहे परिवर्तनों के बावजूद मानव सभ्यता का जीवन, कला-संस्कृति एवं सास्कृतिक, सामाजिक, धार्मिक, भाषायी भिन्नताओं का बचे रहना। मानव विज्ञानियों के अनुसार आदिवासियों को संस्कृति विकास का अवशोषण एवं उपनिवेशवाद का सामना करना पड़ रहा है। जिसमें विभिन्न स्तरों पर विभाजित किया है। जिसमें कला जनजातियों की विविधताओं और लोक कला/ संस्कृति के बारे में व्यापक जानकारी मिलती है। भाषाई लोक साहित्य, सांस्कृतिक धरोहर एवं लोक एवं जनजातियों द्वारा लोकवाद्य यंत्रों के माध्यम से जीवन यापन करने वाले समुदाय के जीवनमूल्यों का ह्रास हो रहा है। वैश्विक पूँजीबादी एवं आधुनिक जीवन शैली में हमारी कला लोकवाद्य बहुत जल्दी विछिन्न हो रहा है। इस परिवेश में उन्हें संजोया जाए यह अति आवश्यक है।

एन.सी.ई.आर.टी. भारत के शिक्षा क्षेत्र में प्रभावशाली भूमिका निभा रही है। प्रारंभिक स्तर से माध्यमिक स्तर तक के पाठ्यक्रम, संरचना पाठ्यपुस्तकें संदर्भ साहित्य एवं प्रशिक्षण, विकास अनुसंधान एवं विस्तार हेतु सतत् कर्मशील है, पाठ्य पुस्तकों के साथ कलाओं पर जिसमें खिलौनों और कठपुतली परम्परा को सौन्दर्यबोध से सहजना अतिआवश्यक है। क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल निरंतर प्रत्यनशील है कि हमारी पश्चिमी भारत के राज्यों जिसके अन्तर्गत गुजरात और दादर नगर हवेली के खिलोनों और कठपुतली कला पर कार्य कर रहे है, जो काफी प्रशंसनीय एवं आवश्यक कार्य है। आज के समय की मांग है क्योंकि यह हमारी सांस्कृतिक पहल है। अत: अगले कुछ वर्षों में उसे संरक्षित एवं सहजा नहीं गया तो वह अस्तित्वविहिन होने के कगार पर है। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. सुरेश मकवाणा, लोककला, खिलोनों और कठपुतली, लोक संस्कृति पर परम्पराओं का चिंतन के साथ एक प्रेरक कार्य कर रहे हैं। कलाओं के संरक्षण और विस्तार हेतु सभी कलाकारों को सहधन्यवाद, जिन्होंनें अपनी कला का प्रायोगिक अनुभव संस्थान के कार्य में लगाया है। यह कार्य नई पीढ़ी को उपयोगी होगा और लोक कलाओं को लम्बे समय तक जिन्दा रखने वाला साबित होगा। सभी को तहदिल से धन्यवाद और शुभकामनाएं देता हूँ।

प्रो. जयदीप मंडल
प्राचार्य, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल

निवेदन

एनसीईआरटी, नई दिल्ली की इकाई क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल द्वारा पश्चिम भारत की विभिन्न चित्रकलाओं, हस्तकलाओं, हस्तशिल्पों और लोक संगीत के वाद्यों पर पिछले छः सात वर्षों में निरंतर शोध-अभ्यास किया जा रहा है। भारत एक महान क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल बहुसांस्कृतिक और कलाओं की अकूत विरासत लिये हुए है। कृषि और वन्य-पर्यावणीय परिवेश भारत की पहचान है। सेटेलाइट और तकनीकी विकास के बाद भी भारत की सांस्कृतिक विरासत में कोई महती परिवर्तन नहीं हुआ है। हाँ बदलाव जरूर आया है। किन्तु लोक संस्कृति, लोकगीत और लोक कलाओं का मूल स्वभाव अभी भी ग्राम परिवेश, जनजातीय क्षेत्र और घुमन्तु समुदायों में बसा हुआ है। लोक संस्कृति मौखिक और अब तकनीकी रूपों से पीढ़ी दर पीढ़ी संरक्षित होकर जिन्दा रही है। लोक संगीत की कोई स्क्रीप्ट, संकेत लिपि या नोटेशन नहीं है फिर भी अपनी विरासत में रचीबसी लोकधुनों, लोक संगीत हो, लोकवाद्य हो, लोक कला हो या लोक संस्कृति आज भी हमें उसकी ओर खिंचते हैं।

खिलोनों और कठपुतली कला एक भव्य विरासत है। लोक कलाएँ, लोकचित्र शैली, लोकवाद्य या लोकगाथाएँ कोई विद्यालय में नहीं सीखा जाता। यह सभी पारम्परिक विद्याओं का बहुल रूप है। जब कोई आदिवासी जंगलों में लकड़ी, फलों के लोभ या पशुओं को चराने जाता है तब प्रकृति के ही विभिन्न माध्यमों से ध्वनि-संगीत सुनता है, फिर वह बॉस, पत्ते, लकड़ी या पत्थरों से संगीत पैदा करता है। कोई पूजा-प्रसंग या धार्मिक कार्यक्रम में समुदाय इकट्ठा होता है और गाने गाता है, नृत्य करता है या कोई संगीत के वाद्य बजाता है। ठीक उसी प्रकार हमारी लोक कलाएं हो या फिर गुफाओं में मिले शैल चित्र, बस ऐसे ही अपना श्रेष्ठ देकर आनंद प्राप्त करता है। इस तरह की परम्पराओं को जानने और परखने के लिए रसिक आँखें और खुले मन से देखना पड़ेगा तब जाकर बरसों से पली-बढ़ी लोक संस्कृति में समाहित मूल्यों, सौन्दर्यबोध, आन्नद, मस्ती और लोगों की वास्तविक संवेदनाएँ नजर आयेगीं। व्यक्ति के जन्म से मृत्यु तक के लगभग सभी स्तरों को लोककलाओं में पिरोया गया है। झुलागीत, लोकगीत, लोकनृत्य, लोकसंगीत और सोकवायों में निहित जीवन दर्शन, मूल्यों, मान्यताएँ, श्रद्धा, प्रकृति के तत्वों के प्रति कृतज्ञभाव, मिथक, परम्पराएँ और समुदाय की महत्वकाक्षां आदि इसमें सम्मिलित है।

हमने पश्चिम भारत की विभिन्न कलाओं को सहजने का उद्देश्य रखा है। जनपदों में रह रहे कलाकारी तक पहुँच बनाकर संस्थान में आमंत्रित किया गया और उनकी कलाओं का दस्तावेज कर डॉयूमेंट्री और लघु फिल्मे बनाई गई। पश्चिम भारत के गुजरात प्रदेश से ऐसे चुनिन्दा कलाकारों को धुंध कर लाना जो, हरे सभ्यता एवं हस्त शिल्प के पारंपरिक खिलौने एवं कठपुतली कला को पीढ़ी दर पीढ़ी सहजते सँभालते आ रहे है, तथा अपनी आने वाली पीढ़ी और आगामी वर्षों तक इस कला में नवाचार कर स्वदेशी व्यापार को भी बढावा दे रहे हैद्य कलाकारों से साथ हमने गुजरात से स्त्रोत व्यक्तियों को भी आमंत्रित किया जिन्होंने अपने अपने प्रान्तों से कलाकारों की खोज की एवं उनके लिखित में साक्षात्कार किये व मॉड्यूल निर्माण भी किया। असल में ऐसे कलाकारों को संस्थान में लाना कोई आसान कार्य नहीं था। अलग-अलग भाषाएँ, वातावरण, परम्परा को हमने संस्थान के छात्रों से रूबरू करवाये, यह एक नवाचार अनुभव था।

खिलोनों एवं कठपुतली द्वारा स्टोरी टेलिंग और सहज शिक्षा अनुभव दे सकते है। लड़की, बांस, पपेरमेशि, गोबर एवं मिटटी से खिलौने बनाना एवं हमारे छात्र-छात्राओं से संवाद करना, चर्चा करना, प्रश्न पूछना और नृत्य, गान करना यह अदभूत सौन्दर्य अनुभव कोई शैक्षिक संस्थान में होता है, ऐसा कम ही होगा। हमारी इस कार्यक्रम में गुजरात के खिलौने एवं कठपुतली के बारे में, शोध और विश्लेषणात्मक संवाद के पश्चात लिखा गया है। लोककलाओं और हस्तकलाओं का दस्तावेज और शोधकार्य अनेक संस्थाओं जैसे जनजातीय और राज्य संग्रहालय, भोपाल विविध राष्ट्रीय कला संग्रहालयों और स्वयंसेवी संस्थाओं ने किया है। यह भी उसी तरह का लेकिन शैक्षिक परिपेक्ष्य का संदर्भ लिये हुआ कार्य जो विशेष रूप से महत्वपूर्ण है जिसमें छात्र-छात्राओं भावी शिक्षकों और वर्तमान अध्यापकों का जुड़ाव हुआ है। मुझे आशा है कि, लोक संस्कृति में खिलोनें एवं कठपुतली जैसी कलाएं सागर में बुन्दों की तरह है जो हमारे देश की सांस्कृतिक विरासत को सौन्दर्य प्रदान करते हैं, आनंद देते हैं और भावी पीढ़ी के लिए एक अनूठा संदर्भ प्रदान करेंगें। गुजरात के पारंपरिक खिलौने एवं कठपुतली से हमारा रिश्ता गहरा बने और उसी धागों, मिट्टी, लड़की, कागज़ से हमारी

मातृभूमि की मिट्टी की महक जैसी संवेदनाएँ महसूस हो तो यह हमारा यह कार्य सफल प्रतीत होगा। यह कार्यक्रम के प्रेरक प्रो. दिनेश प्रसाद सकलानी, निर्देशक NCERT, दिल्ली, प्रो. जयदीप मण्डल, प्राचार्य RIE, भोपाल, प्रो. रमेश बाबु, प्रो. चित्रा सिंह, प्रो. रश्मि सिंघई, डॉ. एन.सी. ओझा, Studio, ईटी लैब व श्री महेश आशुदानी, प्रशासनिक अधिकारी साथ ही कार्यक्रम की प्रोजेक्ट फ़ेलो डॉ. अंकिता जैन व समस्त आरआईई परिवार भोपाल के प्राध्यापक, सहप्राध्यापक, छात्र-छात्राओं को धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ।

धन्यवाद!

डॉ. सुरेश मकवाना
सह-प्राचार्य (गुजराती)
अध्यक्ष, सामाजिक विज्ञान एवं भाषा शिक्षा विभाग

भूमिका

कला की अवधारणा- कला एक ऐसी सृजनशील क्रिया है, जिसमें सौंदर्य, भावनात्मक अभिव्यक्ति तथा संचार शामिल होता हैं। कला हमारे विचारों, भावनाओं और संवेदनाओं से लेकर हमारे इतिहास, संस्कृति और समाज के समस्त पहलुओं को छू सकती हैं। वर्ष 2017-18 से क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, एन.सी.ई.आर.टी. भोपाल द्वारा कलाओं के विभिन्न रूप जैसे- दृश्यकला, हस्तकला, शिल्पकला, प्रदर्शनकारी इत्यादि कलाओं का संरक्षण कर उनसे जुड़े चुनिंदा कलाकारों को आमंत्रित करता है एवं उनके योगदान और प्रोत्साहन हेतु नई-नई कार्यशालाओं का आयोजन भी करता है इसी शृंखला में आरआईई, भोपाल इस वर्ष खिलौने एवं कठपुतली के पारंपरिक कलाकारों हेतु कार्यशालाओं का आयोजन किया है।

खिलौने और कठपुतली हमारी संस्कृति और सभ्यता का हिस्सा रहे हैं। प्रत्येक व्यक्ति का बचपन उन खिलौनों और खेलों की यादों से भरा होता है, जो उसने अपने जीवन के शुरुआती वर्षों मे खेलें थे। खेल की ऐसी वस्तुऐं, जिन्हें आमतौर पर बच्चों के शैक्षणिक, मानसिक, बौद्धिक और व्यक्तिगत जीवन की सीख को विकसित करने हेतु निर्मित किया जाता है, उन्हें खिलौने कहा जाता है। जिससे बच्चों के अंदर 'सीखने की कला' को प्रोत्साहित/ विकसित किया जाता है।

NEP-2020 में हमारी कलाएँ एवं संस्कृति को इस तरह से उल्लेख किया गया है- अध्याय 22 के 22.1 पृष्ट संख्या 86 अनुसार- 'भारत संस्कृति का समृद्ध भंडार है, जो हजारों वर्षों में विकसित हुआ है और यहाँ की कला, साहित्य कृतियाँ, प्रथाओं, परंपराओं, भाषाई अभिव्यक्तियों, कलाकृतियों, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक धरोहरों के स्थलों इत्यादि में परिलक्षित होता हुआ दिखता है।'

खिलौने (Toys)

हमारे देश में खिलौनें बनाने का बहुत प्राचीन इतिहास रहा है। भारत में खिलौनों का प्रयोग अति-प्राचीन सिंधु घाटी सभ्यता एवं मोहनजोदड़ो के खण्डहरों से भी यह प्राप्त हुए है। इसी प्रकार भीमबेठका, उदयगिरि के शिलालेखों पर जो प्राचीन चित्र प्राप्त है, उनमें खेलों का वर्णन एवं साक्ष्य भी मिलता है। खिलौने बचपन से किशोरावस्था तक के मानवीय विकासक्रम की बुनियाद है। कहे;-खेल में हम जीवन

कठपुतली (Puppets)

भारत में कठपुतली का प्रचलन प्राचीन काल से ही रहा है और देश के अलग-अलग हिस्सों में इसे अलग- अलग नामों से जाना जाता है। राजस्थान में कठपुतली, पश्चिम बंगाल में तारेर पुतुल नाच, महाराष्ट्र में कालसुत्री बाहुल्य, ओडिशा में गोपालिला कुंडेई, कर्नाटक में यक्षगान गोम्बेयता, केरल में नूल पावकोथु, तमिलनाडु में बोम्मलट्टम, आंध्र प्रदेश में और तेलंगाना में कोय्या बोम्मालता आदि नामों से प्रसिद्ध परंपराएं बताई गई हैं। सिंधु घाटी सभ्यता के उत्खलन से मिट्टी की गुडिया से इसका संकेत मिलता है। कठपुतली रंगमंच का एक प्राचीन रूप है और रंगमंच शिक्षण प्रकिया का महत्वपूर्ण हिस्सा है। कम उम्र में ही युवा दिमाग को ऐसी दिशा में ढाला जा सकता है और उसके रचनात्मक कौशल को कलात्मक ढंग से विकसित करने हेतु कठपुतली और खिलौनें जैसे माध्यम का उपयोग किया जाता हैद्य खिलौनों और कठपुतली द्वारा बच्चों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति को समझकर उन्हें पोषित किया जाता है

उद्देश्य- भारत में कलाकारों द्वारा बहुत सारी कला विद्याओं का अभ्यास किया जाता है। शिक्षा प्रणाली में कला के अनेक रूपों को ब ?ावा देने हेतु इस वर्ष Development of Resource Centre for Arts & Crafts at RIE, Bhopal द्वारा Toy's and Puppets के कलाकारों के रचनात्मक कौशल को शिक्षा प्रणाली से जोड़ के उनके योगदान को समेकित किया जायेगा। आगामी कर्यशाला के अंतर्गत प्रमुख रूप से गुजरात एवं दादरा और नगर हवेली तथा द्वीव-दमन के खिलौनें एवं कठपुतली कारीगरों/कलाकारों को आंमत्रित किया जायेगा। जो परंपरागत भारतीय विरासत और कला संस्कृति को सहजने का कार्य पीढी दर पीढ़ी से करते आ रहे है। खिलौने और कठपुतली बनाने की प्राचीन प्रणाली, प्रकार, इतिहास, महत्व, हस्तकौशल कलाओं का संरक्षण एवं संवर्धन, नये आधुनिक समय में नवाचार एवं स्वदेशी हस्तनिर्मित वस्तुओं का प्रचार-प्रसार, कलाकारों का योगदान एवं नई शिक्षा प्रणाली में खिलौनों

एवं कठपुतली का महत्व इत्यादि बिन्दुओं को प्रकाश में लाना ही आगामी कार्यशाला का मूल उद्देश्य है। राष्ट्रीय शिक्षानीति के अंतर्गत स्त्रोत-पुस्तिका एवं डिजिटल दस्तावेज़ीकरण किया जायेगा तथा उसका प्रकाशन भी किया जाएगा।

महत्व- खिलौना आधारित शिक्षाशास्त्र सीखने-सिखाने का एक रोचक तरीका है, जिसमें अवधारणाओं और कौशलों को खिलौनों, खेल, कठपुतली आदि का उपयोग करके आनंदपूर्ण कलात्मक तरीके से सीखा जाता है। अमूर्त अवधारणाओं को सरल और स्पष्ट करने में खिलौनों और खेलों का उपयोग विशेष रूप से प्रभावी साबित होता है। खिलौना आधारित शिक्षाशास्त्र न केवल ज्ञान प्रदान करता है बल्कि महत्वपूर्ण कौशल का पोषण भी करता है और शैक्षणिक सामग्री और अवधारणाओं की गहरी समझ को बढ़ावा देता है। आगामी दो कार्यशालाओं द्वारा खिलौनों एवं कठपुतलियों जैसी कलाकारी एवं परंपरगत शैली को पुनः राष्ट्रीय शिक्षानीति 2020 से जोडने का महत्वपूर्ण प्रयास किया जावेगा। समस्त पारंपरिक कलाकारों के द्वारा इन कलाओं को जीवित रखने हेतु जो प्रयास किया जा रहा है, उसके महत्वपूर्ण योगदान पर भी विशेषत: संस्थान के स्टूडियो द्वारा दस्तावेज़ीकरण किया जायेगा। उपरोक्त दस्तावेज़ीकरण से छात्र- छात्राओं को शिक्षा में कलाओं को जोड़कर शिक्षित करने और अपनी संस्कृतिक कलाओं की विरासत को समझने, संरक्षित करने का अवसर भी मिलेगा। यह कार्य पश्चिम भारत के क्षेत्र को ध्यान में रखकर किया जा रहा है, जो भविष्य में समग्र देश को प्रेरित कर सकता है।

अनुक्रम सूची

- निवेदन
- भूमिका
- कार्यक्रम की कार्यशाला पर समीक्षा (प्रथम गतिविधि)

  गुजरात के खिलौने और कठपुतलियों पर कार्यशाला

  कार्यक्रम की कार्यशाला की समीक्षा (द्वितीय गतिविधि)

  फिल्ड विजिट-अहमदाबाद, गुजरात की क्षेत्रीय यात्रा द्वारा दस्तावेजीकरण
- गुजरात, दादरा नगर हवेली तथा द्वीव-दमन के खिलौनों तथा पपेट्स पर कार्यशाला की समीक्षा (तृतीय गतिविधि)
- गुजरात प्रदेश के खिलौनों तथा पपेट्स पर कार्यशाला की समीक्षा (चतुर्थ गतिविधि)
- संदर्भ पुस्तकें एवं संस्थाएं
- फोटो गैलरी व समूह माध्यमों में कार्यक्रम

प्रथम आयोजन कार्यशाला की समीक्षा

दिनांक 12 अगस्त, 2024 से 14 अगस्त, 2024

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल में कलाओं एवं हस्तकलाओं के स्रोत केंद्र का विकास के अंतर्गत संस्थान में तीन दिवसीय गुजरात के खिलौने और कठपुतली हैं> डबुक निर्माण पर गुजरात, दादरा नगर हवेली और द्वीव-दमन राज्यों के संदर्भ में कार्यशाला का आयोजन किया गया। विगत वर्षों में संस्थान द्वारा कलाओं के स्रोत केन्द्र के अंतर्गत मध्यप्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़ एवं गोवा राज्यों की कलाओं, हस्तकलाओं तथा लोक कलाओं एवं आदिवासी वाद्यों पर कलाकारों द्वारा प्रायोगिक कार्य एवं भ्रमण के साथ कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। गुजरात, दीव-दमन एवं दादरा नगर हवेली के 10 स्रोत व्यक्तियों को संस्थान में आमंत्रित किया गया-

1. डॉ. कांतिभाई गोर, सेवानिवृत कुलपति, कच्छ विश्वविद्यालय
2. डॉ. निसर्ग आहिर, सह-प्राध्यापक, अहमदाबाद
3. श्री रणवीर सीसोदिया, निर्देशक, धरोहर फाउंडेशन, वडोदरा
4. श्री भरत अग्रावत, निवृत्त अध्यापक, डायेट, अमरेली
5. श्री राघव कटकीया, प्रा.शि. मितियाला, जाफराबाद, अमरेली
6. श्री योगेश चौधरी, अध्यापक, डायेट, वघई, डांग
7. श्री रमेश प्रजापति, प्रा.शि बनासकांठा
8. श्रीमती शुभांगी पाटील, प्रा.शि. सूरत
9. सुश्री सेजल राठवा, आदिवासी अकादेमी, अकादमी
10. सुश्री पायल रोत, सहायक प्राध्यापक, चिल्ड्रेन्स रिसर्च यूनिवर्सिटी, गांधीनगर

आंतरिक स्रोत व्यक्ति-

1. डॉ. वेंकट सूर्यवंशी
2. डॉ. प्रध्युमन सिंह लखावत
3. डॉ. अरुणाभ सौरभ
4. डॉ. कल्पना मास्की
5. श्री रतनेरे, टी.जी.टी
6. डॉ. अंकिता जैन

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल एवं डीएमएस भोपाल के कई शिक्षकों और विद्वानों ने स्रोत व्यक्तियों के साथ मिलकर गुजरात के कठपुतली एवं खिलौने का परिचय प्रश्नोत्तरी के माध्यम से हेंडबुक के लिए टंकित किया। खिलौने और कठपुतली का इतिहास, सांस्कृतिक व साहित्यिक संदर्भ, वैविध्य और विस्तार, भिन्न-भिन्न स्वरूप, विविधस्तरीय प्रकार, विस्मृत परंपराएँ, वर्तमान परिवेश, शिक्षण अधिगमन में प्रयोग, वर्तमान में कार्यरत पारंपरिक कलाकारों की सूची, कठपुतली एवं खिलौने बनाने वाले कारीगरों/कलाकारों को मार्गदर्शन, प्रोत्साहन एवं सुझाव व उक्त तथ्यों का डिजिटल दस्तावेजीकरण करना आदि बिंदुओं पर चर्चा की गयी।

तीन दिवसीय इस कार्यशाला के अंतर्गत हमारे स्रोत व्यक्तियों द्वारा खिलौने एवमं कठपुतलियों एवं उनके पारंपरिक कारीगरों/कलाकारों के संदर्भ में पी.पी.टी. द्वारा प्रस्तुति (प्रेजेंटेशन) भी दिया गया। जिसमें हमने गुजरात के खिलौने एवं

कठपुतलियों का एक संक्षिप्त इतिहास, संस्कृति और सभ्यता के साथ-साथ वर्तमान में खिलौने और कठपुतलियों के परिपेक्ष को भी देखा। कहानी और किस्से सुने। जो परंपरागत भारतीय विरासत और कला संस्कृति को सहजने का कार्य पीढ़ी-दर-पीढ़ी करते आ रहे है, उन कारीगरों, कलाकारों का कला जगत में योगदान एवं नई शिक्षा प्रणाली में खिलौने एवं कठपुतली का महत्व इत्यादि बिंदुओं को प्रकाश में लाने हेतु आगामी कार्यशाला की रूपरेखा भी तैयार की। कार्यशाला के अंतिम दिन गुजरात से पधारे स्रोत व्यक्तियों को क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान भोपाल में कार्यरत विद्वानों और छात्र-छात्राओं से रूबरू कराया। साथ ही प्राचार्य, प्रोफेसर चित्रा सिंह एवं रमेश बाबू भी हमारी इस कार्यशाला का हिस्सा बने जिन्होंने बहुत सहज रूप से स्रोत व्यक्तियों के प्रति एवं इस कार्यशाला की नई शिक्षा में उपयोगिता के प्रति अपने-अपने भाव प्रकट किये।

प्रोफेसर रमेश बाबू का कहना है, कि "हर एक विषय में कला है किसी भी विषय को समझने के लिए केवल ज्ञान की आवश्यकता नहीं होती उसके लिए उस विषय की कला को समझना अति आवश्यक होता है तब बच्चे के मन में स्ट्रेसफुलनेस नहीं बल्कि हैप्पीनेस जन्म लेती है।"

प्रोफेसर चित्रा सिंह के शब्द- "कला हमारे जीवन का एक अमूल्य हिस्सा है। कला जब तक हमारे हृदय में बसी है तब तक हम मशीनी कलपुर्जा बनने से बच्चे रहेंगे। टॉय बेस पेडागोजी का साइंस में जितना महत्व रहा है उतना ही महत्वपूर्ण अब कला शिक्षा में भी है। कलाकार आत्मा से कार्य करता है और जब वह अपनी आत्मा किसी कार्य में ऊलीच देता हैं तब इस तरह के रंग देखने को मिलते है।"

समापन समारोह में हमारे समस्त स्तोत्र व्यक्तियों ने खुशी व्यक्त की और इस तरह की कार्यशालाओं के नियमित आयोजन करने की बात कहीं। प्रो. डॉ कांति भाई गौर, डॉ. निसर्ग आहिर एवं श्री रणवीर सीसोदिया एवं समस्त स्रोत व्यक्तियों द्वारा आयोजन एवं प्रबंध हेतु आभार व्यक्त किया गया। क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान में अपना तीन दिवसीय अनुभव साझा किया। साथ ही साथ संस्थान का भ्रमण, स्टूडियो का भ्रमण आदि भी किया। स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर आयोजित तिरंगा यात्रा में हमारे स्रोत व्यक्तियों ने हिस्सा लिया। समापन समारोह में प्रमाण पत्र वितरण के साथ कार्यशालय संपन्न हुई। साथ ही साथ संपूर्ण कार्यशाला का डिजिटल दस्तावेजीकरण ऑडियो एवं वीडियो में हमारे संस्थान के स्टूडियो द्वारा किया गया।

गुजरात के खिलौने और कठपुतली- हेंडबुक (प्रस्तावित रूपरेखा)

(गुजरात, दादरा नगर हवेली तथा दीव-दमन)

खिलौना और कठपुतली

(गुजरात, दादरा नगर हवेली और दीव-दमन के परिप्रेक्ष्य में)

अनुक्रम	अध्याय	लेखक
1.	भारतीय संस्कृति, कला और शिक्षा के संदर्भ में कठपुतली और खिलौने की भूमिका	कान्ति गोर
2.	भारतीय ज्ञान प्रणाली में कठपुतली और खिलौनों का महत्व	सुरेश मकवाणा रमेश प्रजापति
3.	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, फाउंडेशनल स्टेज-2022 एवं राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, स्कूल शिक्षा-2023 के संदर्भ में कठपुतली और खिलौनों का संदर्भ और महत्व	सुरेश मकवाणा पायल रोत व्यंकट सूर्यवंशी
4.	खिलौनों का इतिहास	निसर्ग आहीर
5.	खिलौनों का सांस्कृतिक व साहित्यिक संदर्भ	निसर्ग आहीर
6.	भारतीय खिलौनों का वैविध्य और विस्तार	निसर्ग आहीर

7.	खिलौनों का स्वरूप और विविधस्तरीय प्रकार ◆ क्षेत्र के अनुसार प्रकार ◆ भौगोलिक विस्तार के अनुसार प्रकार ◆ समुदाय/जाति के अनुसार प्रकार ◆ उद्देश्य के अनुसार प्रकार ◆ माध्यम के अनुसार प्रकार ◆ बालक की आयु और खिलौनों के प्रकार	सेजल राठवा योगेश चौधरी राघव कटकिया
9.	खिलौनों की विस्मृत परंपराएँ	अरुणाभ सौरभ पायल रोत
10.	खिलौनों की वर्तमान परंपरा और वैविध्य	रणवीर सिसोदिया
11.	शिक्षण अधिगम में प्रयोग (अध्ययन निष्पत्ति, गतिविधियां, अनुबंध और समावेश	योगेश चौधरी पायल रोत
12.	वर्तमान में कार्यरत पारंपरिक कलाकारों की सूची एवं कृतियों का डिजिटल दस्तावेजीकरण	अंकिता जैन तथा स्रोत विशेषज्ञ
13.	खिलौने बनाने वाले कारीगरों/ कलाकारों को व्यावसायिक मार्गदर्शन, प्रोत्साहन एवं सुझाव	प्रध्युमन सिंह लखावत भ र त अग्रावत
14.	कठपुतलियों का सांस्कृतिक व साहित्यिक संदर्भ	निसर्ग आहीर
15.	कठपुतलियों का इतिहास	निसर्ग आहीर
16.	भारतीय कठपुतलियों का वैविध्य और विस्तार	निसर्ग आहीर
17.	कठपुतलियों का स्वरूप और विविधस्तरीय प्रकार ◆ क्षेत्र के अनुसार प्रकार ◆ भौगोलिक विस्तार के अनुसार प्रकार ◆ समुदाय/जाति के अनुसार प्रकार ◆ उद्देश्य के अनुसार प्रकार ◆ माध्यम के अनुसार प्रकार ◆ बालक की आयु और कठपुतली के प्रकार	सेजल राठवा शुभांगी पाटील व्यंकट सूर्यवंशी
18.	कठपुतलियों की विस्मृत परंपरा	अरुणाभ सौरभ पायल रोत
19.	कठपुतलियों की वर्तमान परंपरा और वैविध्य	रणवीर सिसोदिया
20.	शिक्षण अधिगम में प्रयोग (अध्ययन निष्पत्ति, गतिविधियां, अनुबंध और समावेश	योगेश चौधरी पायल रोत रमेश प्रजापति
21.	कठपुतली बनाने वाले कारीगरों/कलाकारों को व्यावसायिक मार्गदर्शन, प्रोत्साहन एवं सुझाव	प्रध्युमनसिंह लखावत भरत अग्रावत

22	वर्तमान में कार्यरत पारंपरिक कलाकारों की सूची तथा कृतियों का डिजिटल दस्तावेजीकरण	अंकिता जैन तथा स्रोत विशेषज्ञ
	परिशिष्ट संदर्भ ग्रंथ सूची कलाकारों तथा कारीगरों की सूची संस्थाएं एवं संग्रहालय वेबसाइट	अंकिता जैन

कार्यशाला के छायाचित्र

फील्ड विजिट

समीक्षा

अहमदाबाद, गुजरात में 22 से 26 अक्टूबर 2024 में क्षेत्रीय यात्रा द्वारा दस्तावेजीकरण

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल में कलाओं के स्रोत केंद्र का विकास के अंतर्गत संस्थान द्वारा गुजरात के अहमदाबाद में पांच दिवसयीय क्षेत्रीय यात्रा कर खिलौने एवं पपेट कलाकारों के साक्षात्कार कर दस्तावेजीकरण किया गया, जिसमें प्रमुख रूप से-

- पद्मश्री महिपत राव कवि, जितेंद्रनगर पत्रकार कोलोनी, अहमदाबाद
- पल्लवी अतुल व्यास, (पुत्री- महिपत राव कवि) पत्रकार कोलोनी, अहमदाबाद
- श्री मानसिंह ज़ाला, अंतराष्ट्रीय पपेट कलाकार, घटलोदिया, अहमदाबाद
- श्री रमेश रावल, राष्ट्रीय पपेट कलाकार, भीमजीपुरा नवा वडाज, अहमदाबाद

समस्त माननीय कलाकारों से रूबरू मिलकर उनकी जीवनी तथा उनके कलात्मक जीवन पर चर्चा की गई, उनके स्टूडियो तथा घर में संगृहीत पपेट्स को देखा तथा उनके विडियो भी रिकॉर्ड किये गए।

पद्मश्री महिपत राव कवि, आपका जन्म मार्च 1931 में हुआ, आपको राष्ट्रपति द्रोपती मुर्मू द्वारा वर्ष 2022 में पदमश्री सम्मान से सम्मानित्त किया गया, आपने अपना सम्पूर्ण जीवन पपेट कला को सौंप दिया, आपने ड्रामा में डिप्लोमा भी किआ है, आपको क्लासिकल एवं फोक म्यूजिक में भी महारत हासिल है, आप हिंदी, इंग्लिश, गुजराती, सिन्धी एवं उर्दू भाषा को लिखना एवं पढ़ना जानते है। आपने न केवल भारत में अपितु फ्रांस, डेनमार्क, इटली, जेर्मेनी, स्वीडन, स्विटजरलैंड, इंग्लैण्ड, स्कॉटलैंड एवं दुबई समेत अनेकों देशों में पपेट कला का प्रदर्शन कर ख्याति प्राप्त की है आपने लगभग 4000 पपेट शो राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर किए है। आपने रामायण, राजा हरिश्चंद्र, पंचतंत्र की कहानियों एवं डाकघर जैसी कहानियों का मंचन कठपुतली द्वारा किया 22 पुस्तकों का प्रकाशन गुजराती में हो चुका है एवं 8 पुस्तकों का प्रकाशन अभी किया जाना है।

पद्मश्री महिपतराव कवि, साक्षात्कार

श्री कवि को कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया जिसमे गौरव पुरस्कार वर्ष 19941 में, झवेरचंद मेघानी पुरस्कार वर्ष 2001 में, 2012 टेगोर पुरस्कार एवं 2018 में राष्ट्रीय गौरव पुरस्कार से सम्मानित किया गया। आपने चमड़े से बने पपेट, वगव्स से बने पपेट, पेपर पपेट आदि द्वारा कहानियों का मंचन किया। आपकी सुपुत्री पल्लवी अतुल व्यास अभी आपके मार्गदर्शन में पपेट कला का प्रदर्शन सम्पूर्ण भारत वर्ष में प्रदर्शन कर रही है, और अपनी पारिवारिक प्रथा को पीडी दर पीडी आगे बढ़ा रहीं है। श्रीमती व्यास की नातिन माहि 6 वर्ष की है और वो भी अपने परनाना से पपेट कला को सिख रही है, तथा इस विलुप्त होती कला का संवर्धन तथा संरक्षण कर रही है।

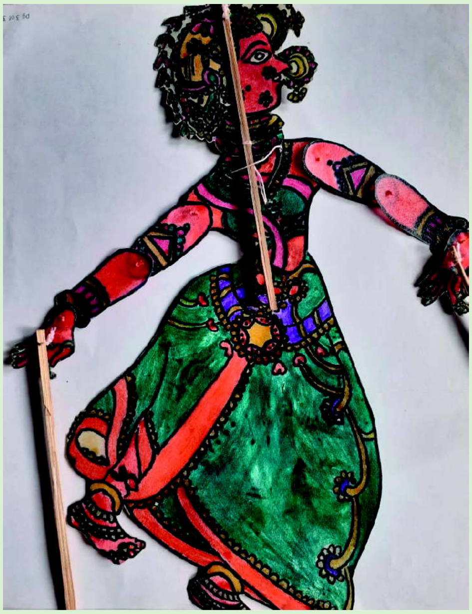

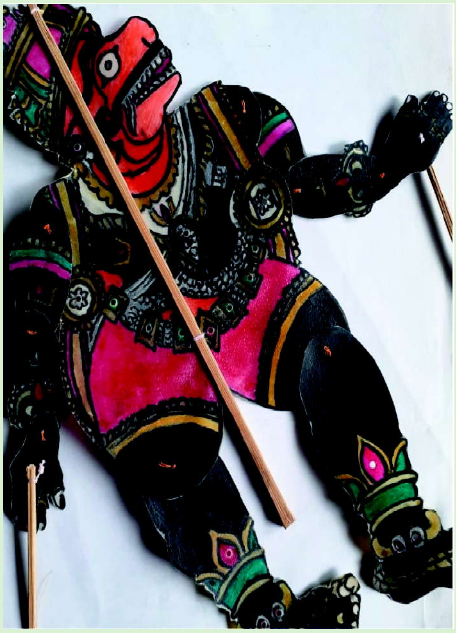

श्रीमती पल्लवी अतुल व्यास, शैडो पपेट के साथ

मानसिंह जाला, गुजरात के जाने माने पपेट कलाकार है, आपने भारत में नही अपितु विदेशों में भी अपनी कला का प्रदर्शन कर ख्याति अर्जित की है। आपने पाकिस्तान में भी जाकर रामायण की प्रस्तुति दी, आपने मैहर कांट्रेक्टर के मार्गदर्शन में पपेट कला सीखी। जब हमारी टीम श्री जाला के घर पहुची तब उन्होंने हमारे साथ उनकी जीवने के यादकर पलों को साँझा किया, पपेट कला की बरीकियों से अवगत कराया साथ पपेट का प्रदर्शन एवं उसके साथ अभिनय को कैसे जोड़ा जाता वह करके दिखाया।

मानसिंह जी जाला के निवास स्थल पर

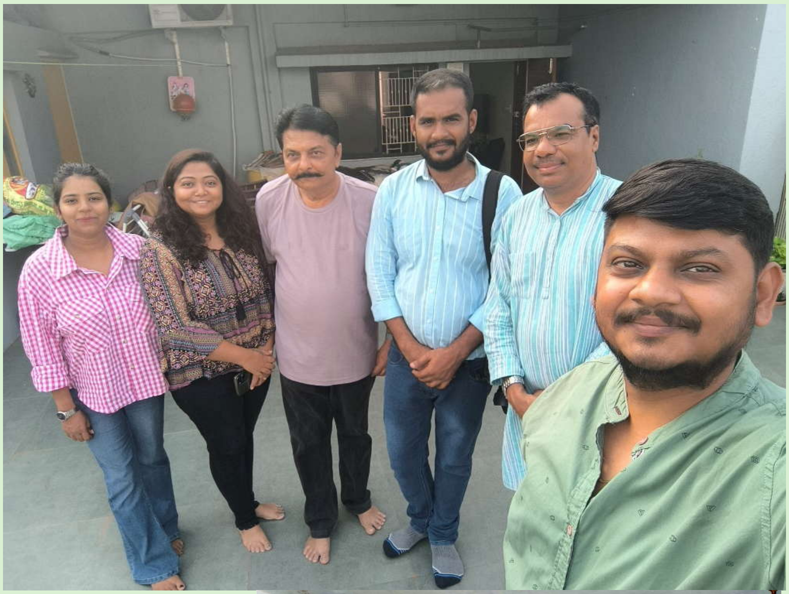

रमेश रावल, गुजरात के एक पपेट कालकार है, जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन पपेट्री को सौंप दिया, न आपने विवाह न कोई नौकरी, आपके लिए आपका घर परिवार सभी कुछ पपेट्स ही रहे है, एक छोटे से कमरे में आप अपनी छोटी बुजुर्ग बहन के साथ रहते है, और घर का दूसरा हिस्सा आपने पपेट्स कला के लिए रख रखा है, जहाँ आप पपेट्स बनाते है, उनके साथ सम्वाद करते है और अपना सम्पूर्ण जीवन कला के प्रति समर्पित करते है। आपने कई राष्ट्रीय एवं अतर्राष्ट्रीय स्तर शो किये है।

श्री रमेश रावल जी निवास स्थल पर

कलाकारों के साक्षात्कार कर अंतिम दिवस संध्या को हमें डॉ. निसर्ग आहिर अहमदाबाद की सबसे खूबसूरत जगहों में से एक द विशाला म्यूजियम ले गए। द विशाला अहमदाबाद में स्थित भारतीय सभ्यता और परंपराओं से परिपूर्ण 'द विशाला' एक ऐसा संग्रहालय (म्यूज़ियम) है जो बीते हुए भारत को दर्शाता है जहां भारतीय परंपरा, संस्कार, इतिहास और प्राचीन कालीन जीवन, रहने-सहन को भली भांति महसूस किया जा सकता है। विशाला हमें उस युग में ले जाता है जहां से अपने पूर्वजों के संस्कार और उस युग की कला का अनूठा रूप देख सकते है।

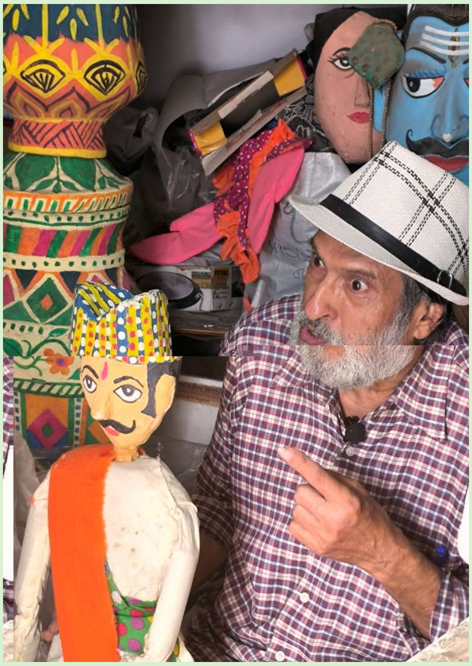

कुछ इसी तरह 5 दिवसीय फील्ड विजिट सफलतापूर्वक सम्प्पन कर हमारी टीम की वापसी हुई।

विशाला म्युज़ियम, अहमदबाद

तृतीत कार्यशाला की समीक्षा

गुजरात, दादरा नगर हवेली तथा द्वीव-दमन के खिलौनों तथा पपेट्स पर कार्यशाला

11-15 नवम्बर, 2024

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल में कलाओं के स्रोत केंद्र का विकास के अंतर्गत संस्थान में पाँच दिवसीय 'गुजरात, दादरा नगर हवेली तथा द्वीव-दमन के खिलौनों तथा पपेट्स पर कार्यशाला' कार्यशाला का आयोजन किया गया। उपरोक्त कार्यशाला के अंतर्गत प्रमुख रूप से गुजरात एवं दादरा और नगर हवेली तथा द्वीव-दमन के खिलौनें एवं कठपुतली के 30 कारीगरों-कलाकारों को आंमत्रित किया गया है, जिसमे समस्त कलाकार गुजरात के अलग अलग प्रांतों से आए हुए है, जो परंपरागत भारतीय विरासत और कला संस्कृति को सहजने का कार्य पीढी दर पीढ़ी से करते आ रहे है। कलाकारों द्वारा संस्थान में बांस, नारियल के पत्ते, खादी एवं सूती कप ?ीं, मिट्टी एवं अलग अलग प्रकार के घरेलू एवं देसी संसाधनों से खिलौने का निर्माण किया जा रहा है साथ स्टिंग पपेट, पेपर पपेट, रॉड पपेट, एवं अन्य पारंपरिक पपेट का निर्माण कर उनका प्रदर्शन संस्थान के विद्यार्थियों के लिए किया जा रहा है। कार्यक्रम के संयोजक डॉ सुरेश मकवाना एवं सहयोगी डॉ अंकिता जैन, जिन्होंने पिछले माह दिनांक 22-26 अक्टूबर तक अहमदाबाद गुजरात का फील्ड विज़िट कर कलाकारों को इस प्रोग्राम से जोड़ा है।

खिलौने और कठपुतली बनाने की प्राचीन प्रणाली, प्रकार, इतिहास, महत्व, हस्तकौशल कलाओं का संरक्षण एवं संवर्धन, नये आधुनिक समय में नवाचार एवं स्वदेशी हस्तनिर्मित वस्तुओं का प्रचार-प्रसार, कलाकारों का योगदान एवं नई शिक्षा प्रणाली में खिलौनों एवं कठपुतली का महत्व इत्यादि बिन्दुओं को प्रकाश में लाना ही आगामी कार्यशाला का मूल उद्देश्य है। राष्ट्रीय शिक्षानीति के अंतर्गत स्रोत-पुस्तिका एवं डिजिटल दस्तावेज़ीकरण किया जायेगा तथा उसका प्रकाशन भी किया जाएगा। विगत 6 वर्षों में संस्थान द्वारा कलाओं के स्रोत केन्द्र के अंतर्गत मध्यप्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़ एवं गोवा राज्यों की कलाओं, हस्तकलाओं तथा लोक कलाओं एवं आदिवासी वाद्यों पर कलाकारों द्वारा प्रायोगिक कार्य एवं भ्रमण के साथ कार्यशालाओं का आयोजन किया गया और लगातार संस्थान कलाओं के स्रोत केंद्र के अंतर्गत कलाओं के संवर्धन एवं संरक्षण हेतु कार्य कर रहा है।

उद्घाटन समारोह प्राचार्य एवं संस्थान के प्रो. चित्रा सिंह, प्रो. बाबू, प्रो. रातन्माला आर्या एवं कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. सुरेश मकवाना एवं अन्य अध्यापकों की उपस्थति में आरंभ हुआ। उपरोक्त कार्यशाला में आमंत्रित कलाकारों एवं स्रोत व्यक्तियों का साक्षात्कार लिया गया एवं स्टूडिओ की टीम द्वारा डिजिटल दस्तावेजीकरण किया गाया द्व कलाकारों द्वारा प्रत्यक्ष रूप से टॉयस एवं पपेट्स का निर्माण कर उनकी प्रदर्शनी भी आयोजित की गई, और समस्त कलाकृतियां जो कलाकारों द्वारा निर्मित की गई उनका संग्रहण संस्थान के सौन्दर्यत्मक हेतु किया गया, जिसमे प्राचार्य कक्ष, भाषा एवं सामाजिक विज्ञान विभाग, संस्थान का कॉरिडोर, कॉन्फरेंस हॉल एवं सभागृह आदि स्थानों पर कलाकृतियों को सुसज्जित किया गया।

कार्यशाला में पांचों दिन कलाकारों ने साइंस पार्क में विद्यार्थियों के साथ मिलकर कलाकृतियों का निर्माण किया, बच्चों को खिलौने बनाना सिखाया ओर शिक्षा में खिलौने ओर कठपुतली के महत्व से हमारे विद्यार्थियों को अवगत कराया। उपरोक्त कार्यशाल में बच्चों ने मिट्टी, बांस, पेपरमेशी, ऊन तथा सूती कप ?ीं से खिलौने बनाए, साथ पेपर पपेट, स्टिंग पपेट, शैडो पपेट, रॉड पपेट आदि बनाना सीखा, बच्चों के साथ साथ संस्थान के प्राध्यापकों ने भी कार्यशाला में भागीदारी दी और पपेट कलाकारों के साथ मिलकर नुक्क? नाटक भी किया द्व कार्यशाला के मध्यांतर बहुउदेशीय विद्यालय में पपेट शो एवं बालवाटिका सेंटर पर भी पपेट शो का आयोजन किया गया जिसमें विद्यालय के छात्र छात्राओं ने ब?-च? के हिस्सा लिया। स्टूडियो टीम द्वारा कलाकारों के साक्षात्कार रिकार्ड की किए जिनका उपयोग आगामी फिल्मों हेतु किया जावेगा। बिरसा मुंडा जयंती के साथ कार्यशाला समापन समारोह सम्पन हुआ, जिसमें प्राचार्य प्रो. जयदीप मण्डल,

प्रो. चित्रा सिंह, प्रो. रमेश बाबू, डॉ. शिवालिका, श्री सौरभ जी उपस्थित रहे। हमारे स्रोत व्यक्ति श्रीमती शुभांगी पाटील, श्री योगेश चौधरी एवं स्रोत कलाकार श्री शिरिल ने अपनी अपनी भावनाएँ व्यक्त कर संस्थान के प्रति अपना आभार व्यक्त किया तथा संस्थान में इस तरह की कार्यशालाओं का आयोजन भविषय करने के लिए प्रोत्साहित भी किया।

गुजरात, दादरा नगर हवेली तथा द्वीव-दमन के 27 तथा भोपाल से 03 कलाकारों/ स्रोत व्यक्तियों को संस्थान में आमंत्रित किया गया जिनकी सूची निम्नानुसार है-

1. श्री रणवीर सीसोदिया, वडोदरा
2. श्रीमती लक्ष्मी सीसोदिया, वडोदरा
3. श्री भरत अग्रावत, अमरेली
4. श्री योगेश चौधरी, डांग
5. श्री शिल्पी प्रजापति, बनासकांठा
6. श्रीमती शुभांगी पाटील, सूरत
7. सुश्री सेजल राठवा, तेजग?
8. सुश्री पायल रोत, गांधीनगर
9. मानसिंह जाला, पपेट कलाकार, अहेमदाबाद
10. रमेश भाई रावल, पपेट कलाकार, अहमदाबाद
11. खापरी बेन, कलाकार, छोटा उडेपुर
12. अनेरी चौहान, कलाकार सूरत
13. जेना बेन, कलाकार दाहोद
14. शंकर भाई, कलाकार
15. मनीषा बेन, कलाकार सूरत
16. अशोक वासवा, कलाकार नवसारी
17. रमन भाई, कलाकार दाहोद
18. आशा बेन, कलाकार
19. जयंती भाई, कलाकार
20. किशन यादव, कलाकार
21. कल्पना बेन, कलाकार
22. हर्षना बेन, कलाकार
23. गमन भाई, कलाकार
24. राजू भाई, कलाकार
25. बीरबल राठोर, कलाकार
26. शिरिल शंगाड़ियाँ, कलाकार
27. धर्मेश भाई, कलाकार
28. धर्मेन्द्र रोहर, कलाकार, भोपाल
29. दिव्या पोरवाल, कलाकार भोपाल
30. श्री प्रवीण पंडाया, भोपाल

आंतरिक स्रोत व्यक्तियों की सूची

31. डॉ. वेंकट सूर्यवंशी
32. डॉ. गंगा महतो
33. डॉ. कल्पना मस्की
34. डॉ. अरुणाभ सौरभ
35. डॉ. प्रध्युमन सिंह
36. डॉ. अंकिता जैन

एवं स्टूडियो से शेख अकरम तथा श्री अंकुश शामिल हुए एवं कार्यक्रम का सफल आयोजन हुआ।

कार्यशाला के छाया चित्र

3.24
and Weather Station'
2024
UCATION, BHOPAL

क्षेत्रीय
भोपाल द्वारा
"Development of Art
कलाओं के स्रोत केन्द्र अंतर्गत
एवं दीव-दमन के खिलौनें और
दिनांक: 11-15

समूह चित्र

चतुर्थ कार्यशाला की समीक्षा

गुजरात प्रदेश के खिलौनों तथा पपेट्स पर कार्यशाला

16-20 दिसम्बर, 2024

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल में कलाओं के स्रोत केंद्र का विकास के अंतर्गत संस्थान में पाँच दिवसीय गुजरात प्रदेश के खिलौनों तथा पपेट्स पर कार्यशाला कार्यशाला का आयोजन किया गया। उपरोक्त कार्यशाला के अंतर्गत प्रमुख रूप से गुजरात के अहमदाबाद, कच्छ, बरोदा आदि से खिलौनें एवं कठपुतली के 31 कारीगरों/कलाकारों को आंमत्रित किया गया है, जिसमे समस्त कलाकार गुजरात के अलग अलग प्रांतों से आए हुए है, जो परंपरागत भारतीय विरासत और

कला संस्कृति को सहजने का कार्य पीढी दर पीढ़ी से करते आ रहे है। कलाकारों द्वारा संस्थान में बांस से कलाकृति, खादी एवं सूती कप ?ें से निर्मित राम-सीता, राधा-कृष्णा, गुडडे-गुडिया, कार्टून केरेक्टर जैसे मोटू-पतलू, हम्टी- बमटी आदि,मिट्टी एवं टेराकोटा से शाल भन्जिका की रेप्लिका, मुरल्स, एवं रानीलक्ष्मी बाई की 2 फिट की मूर्ति, शिवाजी महाराजा की मूर्ति 1 फिट की एवं अलग अलग प्रकार के घरेलू एवं देसी संसाधनों से खिलौने का निर्माण किया गया है साथ स्टिंग पपेट, पेपर पपेट, रॉड पपेट, एवं अन्य पारंपरिक पपेट का निर्माण कर उनका प्रदर्शन संस्थान के विद्यार्थियों के लिए किया गया।

खिलौने और कठपुतली बनाने की प्राचीन प्रणाली, प्रकार, इतिहास, महत्व, हस्तकौशल कलाओं का संरक्षण एवं संवर्धन, नये आधुनिक समय में नवाचार एवं स्वदेशी हस्तनिर्मित वस्तुओं का प्रचार-प्रसार, कलाकारों का योगदान एवं नई शिक्षा प्रणाली में खिलौनों एवं कठपुतली का महत्व इत्यादि बिन्दुओं को प्रकाश में लाना ही आगामी कार्यशाला का मूल उद्देश्य है। राष्ट्रीय शिक्षानीति के अंतर्गत स्रोत-पुस्तिका एवं डिजिटल दस्तावेज़ीकरण किया जायेगा तथा उसका प्रकाशन भी किया जाएगा। विगत 6 वर्षों में संस्थान द्वारा कलाओं के स्रोत केन्द्र के अंतर्गत मध्य प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़ एवं गोवा राज्यों की कलाओं, हस्तकलाओं तथा लोक कलाओं एवं आदिवासी वाद्यों पर कलाकारों द्वारा प्रायोगिक कार्य एवं भ्रमण के साथ कार्यशालाओं का आयोजन किया गया और लगातार संस्थान कलाओं के स्रोत केंद्र के अंतर्गत कलाओं के संवर्धन एवं संरक्षण हेतु कार्य कर रहा है।

उद्घाटन समारोह प्राचार्य एवं संस्थान के प्रो. चित्रा सिंह, प्रो. अश्विनी गर्ग, प्रो. रातन्माला आर्या एवं कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. सुरेश मकवाना एवं अन्य अध्यापकों की उपस्थति में आरंभ हुआ। उपरोक्त कार्यशाला में आमंत्रित कलाकारों एवं स्रोत व्यक्तियों का साक्षात्कार लिया गया एवं स्टूडिओ की टीम द्वारा डिजिटल दस्तावेजीकरण किया गया द्व कलाकारों द्वारा प्रत्यक्ष रूप से टॉयस एवं पपेट्स का निर्माण कर उनकी प्रदर्शनी भी आयोजित की गई, और समस्त कलाकृतियां जो कलाकारों द्वारा निर्मित की गई उनका संग्रहण संस्थान के सौन्दर्यत्मक हेतु संस्थान में कलाकृतियों को सुसज्जित किया गया।

कार्यशाला में पांच दिन कलाकारों ने साइंस पार्क में विद्यार्थियों के साथ मिलकर कलाकृतियों का निर्माण किया, बच्चों को खिलौने बनाना सिखाया, राजस्थान से आये कलाकार मोहित कुमार ने टेराकोटा से मुरल्स बनाना सिखाया, कैसे मिटटी को बनाया जाता है, कैसे हार्ड बोर्ड के ऊपर मिटटी से कलाकृतियाँ उकेरी जाती है, कैसे म्यूरल को पकाया जाता है, उसकी हरेक एक छोटी छोटी बारीकी को सिखाया, मध्य प्रदेश के आर्टिस्ट श्री अनिल कुमार एवं श्री कमलेश कुमार जी रेप्लिका निकलने की विधि सिखाई तथा मिटटी से पशु पक्षियों की आकृतियाँ एवं खिलोने बनाना सिखाया, कलाकार दिव्या पोरवाल एवं मुस्कान ने मध्य-प्रदेश की पारंपरिक कला जिरोती का निर्माण कैनवास पर किया तथा बच्चो को कला के जरिए मध्य भारत की संस्कृति और परंपरा से अवगत कराया, साथ ही बाकि कलाकार जो कच्छ से आये हुए थे उनहोंने कच्छी कला में शुमार कपडें से बने हाथी-घोड़े, ऊँठ, गुडडे गुड़ियाँ आदि का निर्माण किया साथ ही मिटटी को व्हील के माध्यम से आकर देना भी सिखाया, साथ ही साथ शिक्षा में खिलौने ओर कठपुतली के महत्व से हमारे विद्यार्थियों को अवगत कराया। उपरोक्त कार्यशाल में बच्चों ने मिट्टी, बांस, पेपरमेशी, ऊन तथा सूती कपड़ों से खिलौने बनाए, साथ उन्होंने पेपर पपेट, स्टिंग पपेट, शैडो पपेट, रॉड पपेट आदि बनाना सीखा, बच्चों के साथ साथ संस्थान के प्राध्यापकों ने भी कार्यशाला में भागीदारी दी और पपेट कलाकारों के साथ मिलकर नुक्कड़ नाटक भी किया। कार्यशाला के मध्यांतर पपेट शो का भी आयोजन किया गया जिसमें विद्यालय के छात्र छात्राओं ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लियाद्यसाथ ही हमारे स्रोत व्यक्तियों द्वारा कलाकारों के साक्षात्कार लिखित रूप में लिए गए एवं स्टूडियो टीम द्वारा कलाकारों के साक्षात्कार रिकार्ड की किए जिनका उपयोग आगामी फिल्मों हेतु किया जावेगा। इसी तरह कार्यशाला का समापन समारोह सम्पन हुआ, जिसमें प्राचार्य प्रो. जयदीप मण्डल, प्रो. चित्रा सिंह, डॉ. व्यंकट राव, डॉ. गंगा महतो, डॉ. प्रधुमन, डॉ. कुलवीर, डॉ. श्रुति त्रिपाठी, डॉ. सौरभ आदि जी उपस्थित रहे। हमारे स्रोत व्यक्ति प्रो. कांतिलाल गौर, श्रीमती शुभांगी पाटील, अग्रावत सर एवं कलाकारों में श्रीमती दक्षा आदि ने अपनी अपनी भावनाएँ व्यक्त कर संस्थान के प्रति अपना आभार व्यक्त किया तथा संस्थान में इस तरह की कार्यशालाओं का आयोजन भविषय करने के लिए प्रोत्साहित भी किया।

गुजरात के कच्छ, बरोडा, सूरत, अमरेली, अहमदाबाद एवं राजस्थान, मध्यप्रदेश से पधारे 31 कलाकारों-स्रोत व्यक्तियों

को संस्थान में आमंत्रित किया गया जिनकी सूची निम्नानुसार है–

1. प्रो. कांतिभाई गौर, कच्छ
2. श्री भरत अग्रावत, अमरेली
3. श्रीमती शुभांगी पाटिल, सूरत
4. राघव कटकिया, अमरेली
5. धर्मेश ठाकर, अमरेली
6. बोरिसागर भावेश, अमरेली
7. डॉ. प्रग्ना जोशी, पोरबंदर
8. निर्मल निखिल शशिकांत, महुवा
9. उमेश चन्द्र, अमरेली
10. विजय भाई राउत, वलसाड
11. उशाबेन भट्ट, गुजरात
12. अमृतलाल प्रभाराम, बनास्कंठा
13. प्रकाश कुमार परिचंद सोलंकी, बनासकांठा
14. कुमार अब्द्रेंमन, भुज
15. रोशन कुमार, भुज
16. खेरत देजार, भुज
17. रमिला खेरत, भुज
18. अनुभाई मालिक, कच्छ
19. साधिक हसन लुहार, कच्छ
20. श्रीमती दक्षा, भुज
21. वनिता खत्री, भुज
22. रमेश प्रजापति, बनासकांठा
23. मोहित कुमार, राजस्थान
24. सागर कुमार, राजस्थान
25. इन्द्रभान कुशवाहा, सतना
26. प्रवीन पंडया, भोपाल
27. अनिल कुमार, भोपाल
28. कमलेश प्रजापति, भोपाल
29. दिव्या पोरवाल, भोपाल
30. मुस्कान श्रीवास्तव, भोपाल
31. धर्मेन्द्र रोहर, भोपाल

आतंरिक स्त्रोत व्यक्तियों की सूची

1. डॉ. व्यंकट बाबुराव सूर्यवंशी
2. डॉ. अलका सिंह
3. डॉ. रमेश सेठी
4. डॉ. कुसुम
5. डॉ. मुकेश कुमार
6. डॉ. जयंत
7. डॉ. अरुणाभ सौरभ
8. डॉ. प्रधुमन सिंह लखावत
9. डॉ. अंकिता जैन

कार्यशाला के छाया चित्र

उद्घाटन सत्र

INSTITUTE OF EDUCATION
BHOPAL
PAC-23.21
RESOURCE CENTRE
WORKSHOP ON
& PUPPETS OF GUJARAT STATE
14-20 DECEMBER 2024
स. भोपाल

REGIONAL INSTITUTE OF EDUCATION
NCERT, BHOPAL

प्रश्नावली

खिलौने

1. कलाकार/ स्रोत व्यक्ति का परिचय-

    नाम- जन्म-

    स्थान- शिक्षा-

    व्यवसाय-

2. आप कितने प्रकार के खिलौने बनाते है, और किस माध्यम में खिलौने बनाते है?
3. किन किन सामग्रियों और उपकरणों का उपयोग आप खिलौने बनाने में करते है ?
4. खिलौने विक्रय किस तरह से करते है ? खिलौना बाजार की वर्तमान स्थिति पर आपके क्या विचार हैं?
5. जिस विधा में आप खिलौने बना रहे है उसका अस्तिव/ इतिहास कितना पुराना है?
6. शिक्षण प्रणाली में खिलौने किस तरह से उपयोगी होते है? आप कैसे सुनिश्चित करते हैं कि आपका डिज़ाइन बच्चों के लिए सुरक्षित और उपयोगी है?
7. कोई संस्था, ह्लह्ल या सरकार आपको किसी तरह से आपको मदद करती है?
8. खिलौने बनाने की डिजाइन प्रक्रिया क्या होती हैं? और इसमें नवाचार कि क्या क्या संभावनाएं है?
9. गुजरात के अलावा और किन राज्यों में खिलौने बनाए जाते हैं?
10. खिलौना निर्माण प्रक्रिया पर्यावरण के अनुकूल है?
11. क्या खिलौने बनाने लिए आपने कोई डिप्लोमा कोर्स किया है या आपको ये कला पारंपरिक तौर से अपने परिवार से विरासत में मिली है?
12. खिलौने बनाने कि प्रेरणा आपको कहाँ से मिली? कोई सम्मान, पुरस्कार आपको इस विधा के प्रदर्शन से प्राप्त हुआ?
13. खिलौने द्वारा जीवनयापन किया जा सकता है?
13. इस कार्य को करने में आपको किन किन चुनौतियाँ का सामना करना पड़ता है?
14. क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान,भोपाल द्वारा आयोजित कि जा रही इस तरह की कार्यशालायें आपके लिए कितनी उपयोगी है?

कठपुतली

1. कलाकार/ स्रोत व्यक्ति का परिचय

    नाम- जन्म-

    स्थान- शिक्षा-

    व्यवसाय-

2. पपेट क्या है? आप किस विधा में पपेट बनाते है।
3. पपेट का स्थापत्य (ढाँचा) कैसे त्यार किया जाता है और पपेट में सबसे महत्वपूर्ण विशेषता/लक्षण क्या है?
4. क्या पपेट की अपनी कोई भाषाशैली होती है, पपेट किस तरह से संवाद करते है?
5. वर्तमान में पपेट प्रचलन किस तरह से हो रहा है? पपेट का अस्तिव/ इतिहास कितना पुराना है?
6. शिक्षण प्रणाली में पपेट किस तरह से उपयोगी होगा?
7. पपेट को ओर अधिक शक्तिशाली बनाने के लिए कोई संस्था, NGO या सरकार किसी तरह से आपको मदद करती है?
8. पपेट बनाते समय आमतौर पर आप किस तरह की डिजाइन प्रक्रिया का पालन करते हैं? और इसमें नवाचार कि क्या क्या संभावनाएं है?
9. गुजरात के अलावा और किन राज्यों में पपेट बनाए जाते हैं?
15. आज के समय में पपेट संरक्षण कितना महत्वपूर्ण है? इसके विकास हेतु आप किस तरह से अपना योगदान दे रहे है?

11. क्या पपेट कला सिखाने के लिए आपने कोई डिप्लोमा कोर्स किया है या आपको ये कला पारंपरिक तौर से अपने परिवार से विरासत में मिली है?
12. पपेट बनाने कि प्रेरणा आपको कहाँ से मिली? कोई सम्मान, पुरस्कार आपको इस विधा के प्रदर्शन से प्राप्त हुआ?
13. पपेट कला द्वारा जीवन यापन किया जा सकता है?
14. इस कार्य को करने में आपको किन किन चुनौतियाँ का सामना करना पड़ता है?
15. क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान,भोपाल द्वारा आयोजित कि जा रही इस तरह की कार्यशालाओं से पपेट संरक्षण, पपेट कला को प्रोत्साहन, कलाकारों के योगदान में किस तरह से महत्वपूर्ण है?

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. साक्षात्कार एवं बायोडाटा- पद्‌मश्री महिपत राव कवि
2. साक्षात्कार एवं बायोडाटा- श्री मानसिंह जाला
3. साक्षात्कार एवं बायोडाटा- श्री रमेश रावल
4. साक्षात्कार एवं बायोडाटा समस्त स्रोत व्यक्तियों एवं संस्थान में पधारे कलाकारों

- पद्‌मश्री महिपत राव कवि द्वारा लिखित रचनायें
- डॉ. गिर्राज किशोर अग्रवाल, आधुनिक भारतीय चित्रकला- 2015
- डॉ. गिर्राज किशोर अग्रवाल, कला निबंध- 1989

8. र.वि. साखलकर, आधुनिक चित्रकला का इतिहास- 2017
9. . https://indiacurrents.com/bits-of-paper-the-world-of-puppet-art/
10. https://www.rachanakar.org/2019/03/blog-post_vz.html?m=v/toy
11. https://fahrenheitmagazine.com/arte/visuales/tipos-puppetquee&isten-y-su historia
12. https://mhindi.indiawaterportal.org/content?amp=v&id=1319333669 &slugmadhayaparadaesa-kae-paramaukha-darsaya-caitarakaara-evan-unakaa-paraicaya&type=contenttype-page
13. https://artinconte&torg.translate.goog/collageart/?&tr_sl=en&_&_tr _tl=hi&_&_tr_hl=hi&_& tr pto=tc.sc
14. https://fahrenheitmagazine.com/arte/visuales/tipos-de-collage-que-e&isten-y-su historia
15. https://www.rachanakar.org/2012/01/blog-post_8686.html?m=1
16. https://www.toypadagogy.org/2012/01/blog-post_8686.html?m=1
17. https://www.puppetery/2012/01/blog-post_8686.html?m=1
18. https://www.artineducation2019/03/blog-post_15.html?m=1/toy
19. http:www.artineducation/2024-25

अखबार पत्रों में

નો નેગેટીવ ન્યૂઝ
કે.ડી. NEWS
તારીખ : 31/12/2024
Join us on :
કે.ડી. ન્યૂઝ વોટ્સએપમાં મેળવવા મો. 94997 97973 માં આપનું નામ લખી મોકલો અને દરરોજ મેળવો કે.ડી.ન્યૂઝ...

રાષ્ટ્રીય કક્ષાએ અમરેલીના કલાકારોનું અનોખું કલા પ્રદર્શન

તાજેતરમાં તા. 16 થી 20 ડિસે. દરમિયાન RIE - ભોપાલ (મ. પ્ર.) ખાતે યોજાયેલ 'ટોયઝ એન્ડ પપેટ આર્ટ વર્કશોપ' માં અમરેલી જિલ્લાના વિવિધ કલાકારોએ પોતાની કલાનું પ્રદર્શન કરી, સમગ્ર જિલ્લા અને રાજ્યનું ગૌરવ વધારેલ છે. જેમાં ઉમેશ ચાવડા (ચલાલા), ભાવેશ બોરીસાગર (સા. કું.), ધર્મેશ ઠાકર (ખારા) એ પોતાની કલા દ્વારા સૌને મંત્રમુગ્ધ કર્યા હતા. ભરત અગ્રાવત (અમરેલી) તથા રાઘવ કટકિયા (માંડવડા) એ પોતાની કલા સાથે સંયોજક તરીકે પણ કામગીરી સંભાળેલ. સમગ્ર વર્કશોપનું RIE ના કર્મઠ અધિકારી શ્રી ડો. સુરેશ મકવાણાએ સફળ આયોજન કરેલ.

સંદેશ City Li
WEDNESDAY 18.12.2024

શોખ બડી ચીજ હૈ : પપેટ આર્ટિસ્ટ રમેશભાઈ છેલ્લા ૪૫ વર્ષથી પપેટ બનાવીને શો કરે છે

પપેટમેન: સિટીના ૭૦ વર્ષીય રમેશભાઇ પાસે ૧ હજાર અવનવા પપેટનું અનોખું કલેક્શન

પપેટ કળાને જીવતી રાખવા આજીવન લગ્ન ના કરવાનું પ્રણ લેનાર રમેશભાઇ પાસે માઉથ પપેટ, સ્ટિક પપેટ, સ્ટ્રિંગ પપેટ, ગ્લવ પપેટ, રિધમ પપેટ, સ્કાર્ફ પપેટ, માસ્ક પપેટ, પામ પપેટ અને શેડો પપેટ્સનું બિગેસ્ટ કલેક્શન છે

સિટી લાઇફ । એ હાલો, પપેટ શો જોવા... એવી બૂમ પડેને કે તરત જ બાળકોથી લઇને મોટા તમામ કામ છોડીને રામાયણ અને રાજા રાણી, પંચતંત્રની વાર્તાઓ જોવા દોડી આવતા. ઇતિહાસની શૌર્યકથાઓ અને પ્રેમ પ્રસંગોની પ્રસ્તુતિ આ કળાની ખાસ વિશેષતા રહી છે અને આ વાર્તાઓને લોકો પપેટ શો દ્વારા જીવતા હતા. મનોરંજન ઉપરાંત પપેટ્રી શો બાળકોને એજ્યુકેટ કરવાનું, નોલેજ આપવાનું અને તેમના ડેવલપમેન્ટનું કામ પણ કરતા હતા પરંતુ છેલ્લા કેટલાક દાયકાઓથી મનોરંજનના સાધનો વધ્યા અને ટીવી, મોબાઇલ, ઇન્ટરનેટ અને સોશિયલ મીડિયા આવ્યા પછી જાણે પપેટ્રી આર્ટિસ્ટ અને પપેટ શોઝ જાણે નામશેષ થઇ ગયા છે ત્યારે વાડજ વિસ્તારમાં રહેતા ૭૦ વર્ષિય રમેશભાઇ રાવલ પાસે માઉથ પપેટ, સ્ટિક પપેટ, સ્ટ્રિંગ પપેટ, ગ્લવ પપેટ, રિધમ પપેટ, સ્કાર્ફ પપેટ, માસ્ક પપેટ, પામ પપેટ અને શેડો પપેટ્સનું ૧ હજારથી પણ વધારે અને અનોખું કલેક્શન છે. આ અંગે વાત કરતા રમેશભાઇ રાવલે કહ્યું કે, પપેટ્રી એવી આર્ટ છે જ્યાં વિવિધ કળાઓનો સંગમ જોવા મળે છે. નાટ્યકળા, ચિત્રકળા, મૂર્તિકળા, કાષ્ઠકળા, શણગાર, સિલાઇકામ, સંગીત અને નૃત્ય જેવી બધી જ કળાઓ આમાં એક સાથે જોડાયેલી હોય છે. ત્યારે આ વિસરાતી કળા વિશે આજની જનરેશન જાણે અને તેના પર કામ કરે તેના અવેરનેસ માટે હું કામ કરી રહ્યો છું.

મેં પપેટ આર્ટ સાથે જ લગ્ન કર્યા છે અને આર્ટના ડેવલમેન્ટ માટે સતત ઝઝૂમી રહ્યો છું

મારી પાસે જે હસ્તકળા અને શૈક્ષણિક પપેટ આર્ટ છે તે ઇન્ટરનેશનલ પપેટ આર્ટ છે. આ આર્ટ હોવા છતાં જીવન દરમિયાન આ આર્ટને ડેવલપ કરવામાં મને આંખે પાણી આવી ગયા છે. હું ૨૦ વર્ષનો હતો ત્યારે મેં આર્ટ શીખી હતી અને આ આર્ટ માટે હું એટલો પાગલ છું કે મેં લગ્ન નથી કર્યાં. મેં પપેટ આર્ટ સાથે જ લગ્ન કરીને તેને જ જીવનસાથી બનાવી છે પરંતુ તેના ડેવલપમેન્ટ માટે સતત ઝઝૂમી રહ્યો છું. આજે મારી ઉંમર ૭૦ વર્ષની છે પણ આજે પણ હું આ કળાને વળગી રહ્યો છું પણ મને સરકારી કે અન્ય કદરદાન મળ્યા નથી. હું અનેકવિધ કળા ક્ષેત્રે જાત-જાતના વર્કશોપ્સ કરી શકું છું છતાં મને મહિનાઓ અને વર્ષો સુધી આવી પણ કોઇ તક મળતી નથી અને જીવન ચલાવવું અઘરું પડી રહ્યું છે.

-રમેશભાઇ રાવલ, પપેટ આર્ટિસ્ટ

ઇટાલી, રશિયા, ઇરાન, જાપાન, રોમ, પાકિસ્તાન જેવી ઘણી ફોરેન કન્ટ્રીઝમાં પપેટ્રી થિયેટર છે । રમેશભાઇ રાવલે કહ્યું કે, મને નાનપણમાં ચિત્રકામ કરવાનો ખૂબ શોખ હતો અને એટલે વર્ષો પહેલાં મેં દર્પણ એકેડેમીમાં એડમિશન લીધું હતું ત્યારે પપેટ શું છે? અને પપેટ કેવી રીતે બનાવી શકાય તેનો કોઇ ખ્યાલ નહોતો પરંતુ ત્યારબાદ મને પપેટ્રી આર્ટ વિશે જાણકારી મળી ત્યારથી મેં અલગ અલગ પપેટ બનાવવા શરૂ કર્યા છે અને આજે ૪૫ વર્ષથી હું આ કામ કરું છું. મેં ૧ હજારથી પણ વધારે પપેટ બનાવ્યા છે. દુઃખની વાત એ છે કે, ગુજરાતમાં હજુ પણ પપેટ્રી આર્ટને કઠપૂતળીનો ખેલ સમજીને અવગણના કરાય છે અને અમદાવાદમાં મારી જાણકારી મુજબ ૪-૫ પપેટ્રી આર્ટિસ્ટ છે જેને બર્થડે પાર્ટી કે વેડિંગ રિલેશનમાં માંડ વર્ષે એક કે બે ઓર્ડર મળે છે, બાકીના સમયે કામ મળતું જ નથી જ્યારે ઇટાલી, રશિયા, જાપાન જેવી ઘણી ફોરેન કન્ટ્રીઝમાં પપેટ્રી થિયેટર છે જ્યાં નિયમિત પપેટ્રી શોનું આયોજન કરવામાં આવે છે અને લોકો ટિકિટ ખરીદીને જોવા જાય છે.

બાળકોમાં મોબાઇલનું વળગણ છોડાવવા પપેટ્રી શો શ્રેષ્ઠ માધ્યમ છે

આજે બાળકોને મોબાઇલનું વળગણ વધી ગયું છે તેમના ટીચર્સ અને ખાસ કરીને તેમના પેરેન્ટ્સ તેમની આ આદતથી ખૂબ જ ત્રસ્ત છે ત્યારે મને લાગે છે કે બાળકોને ફરી પપેટ્રી શોઝ તરફ પાછા વાળવા જોઇએ. યંગ જનરેશનને પપેટ્રી શો દ્વારા પણ સોશિયલ મેસેજ આપી શકાય કે કમ્યુનિકેટ કરી શકાય છે તે વાત સમજાવવી જોઇએ. બાળકો માટે પપેટ્રી દ્વારા કવિતાઓ સંભળાવી શકાય છે અને પંચતંત્રની વાર્તાઓ ફરીથી જીવંત કરી શકાય છે. સ્કૂલ, કોલેજ અને યુનિવર્સિટીમાં પપેટ શો થવા જોઇએ અને પપેટ મેકિંગના વર્કશોપ પણ થવા જોઇએ. બાળકોને આત્મનિર્ભર બનાવવા માટે આ કળા શીખવવી ખૂબ જરૂરી છે.

રાષ્ટ્રીય કક્ષાએ અમરેલીના કલાકારોનું અનોખું કલા પ્રદર્શન

તાજેતરમાં તા. ૧૬ થી ૨૦ ડિસે. દરમિયાન RIE - ભોપાલ (મ. પ્ર.) ખાતે યોજાયેલ ટોયઝ એન્ડ પપેટ આર્ટ વર્કશોપ માં અમરેલી જિલ્લાના વિવિધ કલાકારોએ પોતાની કલાનું પ્રદર્શન કરી, સમગ્ર જિલ્લા અને રાજ્યનું ગૌરવ વધારેલ છે. જેમાં ઉમેશ ચાવડા (ચલાલા), ભાવેશ બોરીસાગર (સા. કું.), ધર્મેશ ઠાકર (ખારા) એ પોતાની કલા દ્વારા સૌને મંત્રમુગ્ધ કર્યા હતા. ભરત અગ્રાવત (અમરેલી) તથા રાઘવ કટકિયા (માંડવડા) એ પોતાની કલા સાથે સંયોજક તરીકે પણ કામગીરી સંભાળેલ. સમગ્ર વર્કશોપનું RIE ના કર્મઠ અધિકારી શ્રી ડો. સુરેશ મકવાણાએ સફળ આયોજન કરેલ.

--અહેવાલ પ્રકાશ કારીયા

दैनिक भास्कर भोपाल सिटी भास्कर 17-12-2024

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान में विशेष कार्यशाला

सूती कपड़ों, मिट्टी और गोबर से खिलौनों का हो रहा निर्माण

सिटी रिपोर्टर . भोपाल

श्यामला हिल्स स्थित क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान में विशेष कार्यशाला की शुरुआत सोमवार से हुई। इस कार्यशाला में प्रमुख रूप से गुजरात के कच्छ, सौराष्ट्र, पोरबंदर, मप्र और राजस्थान के 30 कलाकारों को बुलाया गया है। ये कलाकार परंपरागत भारतीय विरासत और कला संस्कृति को सहजने का कार्य पीढ़ी दर पीढ़ी से करते आ रहे हैं। प्रिंसिपल जयदीप मंडल प्रो. चित्रा सिंह की उपस्थिति में वर्कशॉप का आयोजन किया जा रहा है। इसमें कलाकारों द्वारा बांस, नारियल के पत्ते, खादी, सूती कपड़ों, मिट्टी एवं गोबर अलग-अलग प्रकार के घरेलू और देसी संसाधनों से खिलौने का निर्माण किया जा रहा है। साथ ही कच्छ से आए कलाकारों द्वारा स्टिंग पपेट, पेपर पपेट, रॉड पपेट और अन्य पारंपरिक पपेट का निर्माण कर उनका प्रदर्शन संस्थान के स्टूडेंट्स के लिए किया जा रहा है। कच्छ के पारंपरिक खिलौने, गहने, राजस्थान के टेराकोटा वॉल म्यूरल्स व मध्य प्रदेश की जिरोती कला, मूर्तियों का लाइव डेमोंस्ट्रेशन कार्यशाला की विशेषता है।

नवाचार और स्वदेशी पर कर रहे काम... कार्यक्रम के संयोजक डॉ. सुरेश मकवाना और सहयोगी डॉ. अंकिता जैन ने बताया कि नए आधुनिक समय में नवाचार, स्वदेशी हस्तनिर्मित वस्तुओं का प्रचार-प्रसार, कलाकारों का योगदान, नई शिक्षा प्रणाली में खिलौनों एवं कठपुतली को महत्व में लाना ही कार्यशाला का मूल उद्देश्य है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अंतर्गत स्त्रोत-पुस्तिका एवं डिजिटल दस्तावेजीकरण किया जाएगा।

ગમનભાઈ બી. ગાંવીત
મુ.પો.- વારોલી તલાટ
તા. કપરાડા, જિ. વલસાડ
9909979590

કલ્પનાબેન ઇશ્વરભાઈ પટેલ
મુ. ઝરિયા પો. લ્હેંસધરા
તા. ધરમપુર જિ. વલસાડ
(સરપંચ શ્રી) મો.નં. 6357

माला खरे.
E-8 167 त्रिलंगा हाउसिंग सोसायटी,
भोपाल (मध्यप्रदेश)
7887092255 / 7415183748 (whatapp.)

ભાપરીબેન નાયકા
ગામ - ઉભલવાંટ, છોટા ઉદેપુર, ગુજરાત 391165
9174507765

વીજલ રાઠવા
ગામ - છોટાઉદેપુર, ગુજરાત 391165
8733025199

જાદવ ... ગામ રાજાપુર ... દાહોદ રાજાપુર ...
9825282099
7567440108

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (भोपाल)

Laxmi Sisodia - Dharohar foundation - 9925323638
Ranvir Sisodia Vadodara - 9879319339
dharohar_09 (instagram Id)

डॉ. व्यंकट सूर्यवंशी क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल
8888230551

Mo- 9979665563.

धर्मेन्द्र ठाकुर भोपाल बांस कलाकार मो. 9981272723

(શિલ્પી બુરેઠા) શિક્ષક, ચિત્રકાર, કવિ
ગામ - બુરેઠા તા. ભાભર જિ બનાસકાંઠા
Mo. 9974485083

Raman d. Patelia
Mathikhera Pra school.
Ta Devgadh Baria Di. Dahod.
Mo - 9979340106

મુ. સાદડાપાડા, તા. ઉમરપાડા
જિ. સુરત
9913696761

રાઠોડ ...
ગામ - ... તા - પોશીના જિ - સાબરકાંઠા - 383
મો.નં - 7600662684 - 9586000065

डॉ अश्वनी कुमार गर्ग 9691282458

डॉ अलका सिंह - 6390362561
DR. RAJESH KUMAR - 9450544644

આહવા
9714210747

ખરાડી ...
ઈડર (રમકડાં બનાવનાર)
ખરાડી ...
જિલ્લો - સાબરકાંઠા
મો - 9974745493

Yogesh H. Chaudhari
Lecturer
DIET- Waghai (Guj.)
9427864774

Nandanvan Society- Parvadi
Vyara, Dist- Tapi

Dang Darshan- Youtube channel

Anesi chauhan.
9499867024
Satrim apartment, Honey Park road.
Surat.

instagram id. (artvibe03_)
youtube - art vibe with anesi.

સિસોદિયા દિનેશ હસમુખભાઈ
સુથાર ફળિયા ... બાજુમાં
મુ. પો. તા. માંડવી જિ. સુરત. ગુજરાત
મો. નં. 97275 90197

Divya porwal
Housing board colony sehore
LIG 93 - (8770075832 - 9713533077)

It was a beautiful and wonderful experience here. We all got to work and learn a lot from the artists we had amazing interaction with everyone and it was a wonderful and great exposure experience. Thankyou.

Vanshika Thakur
9340541345

Very grateful for the amazing opportunity we had from our institute to work with such experienced resourcepersons, and to learn various different artforms from the experts themselves. truly a lifetime experience. We are thankful from the bottom of our hearts to the whole RIE BHOPAL TEAM.

– Priya Sakre
Shiva Tiwari
(B.sc BEd I Sem)

(आपका काम बहोत ही खुबसुरत है।
शुभांगी पटेल (सुरत गुजरात)
9427920905

9586008788
સુરત

Payal Rot, Gandhinagar.
7016128054

प्रयाग पंड्या. ભોપાલ / અમદાવાદ.
9426245700

सुरेश ...
RIE, NCERT, Bhopal
9826815720

Mansinh Zala Ahmedabad. (Puppeteer)
98256 51840.

Adityaraj Zala Ahmedabad (Puppeteer)
98256 52723.

Ramesh Raval Ahmedabad. (Puppeteer)
7874007987.

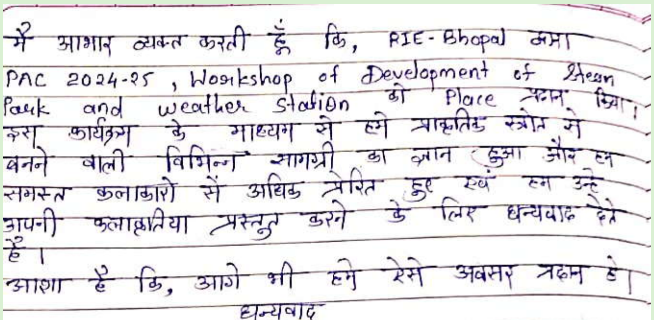
मैं आभार व्यक्त करती हूँ कि, RIE-Bhopal द्वारा PAC 2024-25, Workshop of Development of Learn Park and weather station को Place प्रदान किया। इस कार्यक्रम के माध्यम से हमें प्राकृतिक स्रोत से बनने वाली विभिन्न सामग्री का ज्ञान हुआ और हम समस्त कलाकारों से अधिक प्रेरित हुए एवं हम उन्हें अपनी कलाकृतियां प्रस्तुत करने के लिए धन्यवाद देते हैं।
आशा है कि, आगे भी हमें ऐसे अवसर प्रदान हो।
धन्यवाद
Name- Shreedi Tejasvini

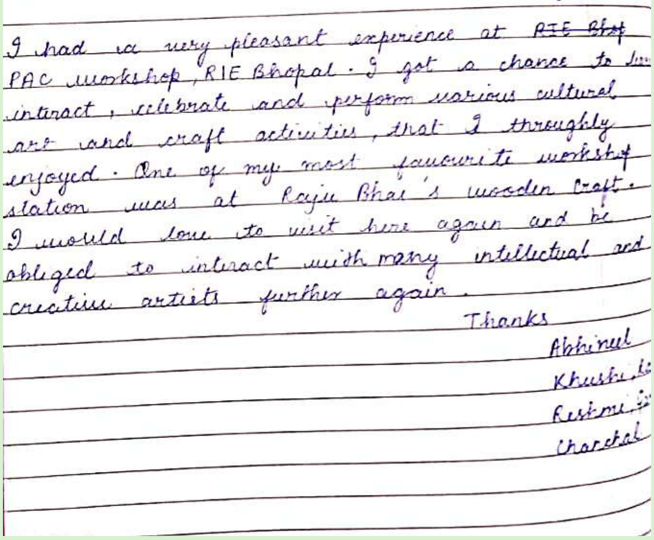
I had a very pleasant experience at ~~RIE Bhop~~ PAC workshop, RIE Bhopal. I got a chance to learn interact, celebrate and perform various cultural art and craft activities, that I throughly enjoyed. One of my most favourite workshop station was at Raju Bhai's wooden craft. I would love to visit here again and be obliged to interact with many intellectual and creative artists further again.
Thanks
Abhinav
Khushi
Rashmi
Chanchal

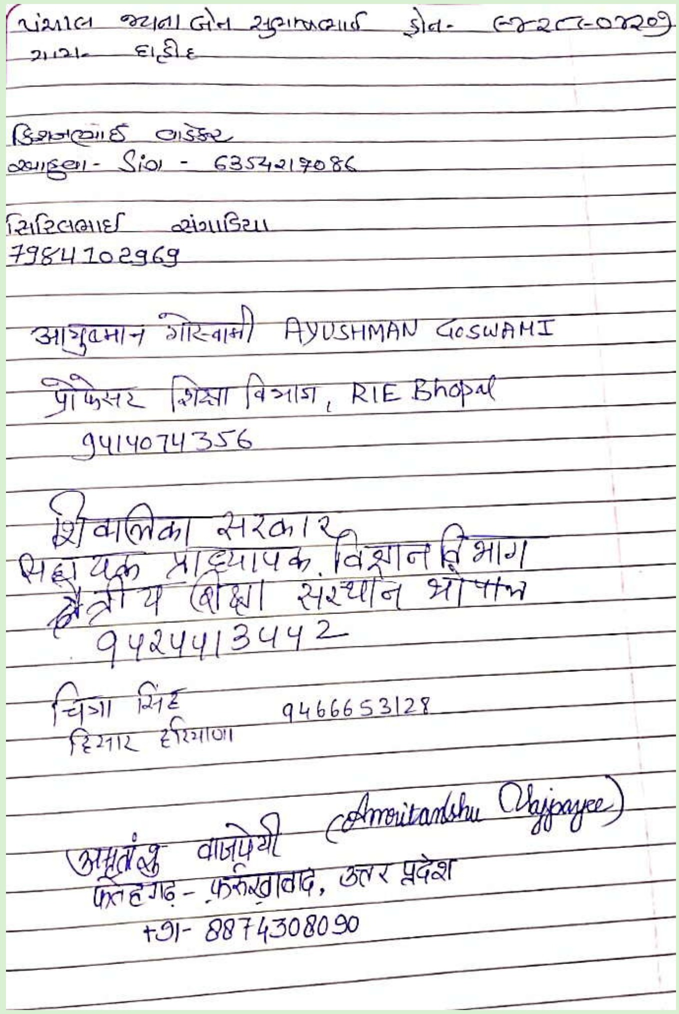
પંચાલ જ્યના જૈન સુભાષભાઈ ફોન- ૯૪૨૮૮-૦૪૪૦૭
ગામ- દાહોદ

કિશનભાઈ વાડેકર
બાહુલા- Sio - 6354217086

સિરિલભાઈ સંગાડિયા
7984102969

आयुष्मान गोस्वामी AYUSHMAN GOSWAMI
प्रोफेसर शिक्षा विभाग, RIE Bhopal
9414074356

शिवालिका सरकार
सहायक प्राध्यापक विज्ञान विभाग
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान भोपाल
9424413442

चित्रा सिंह 9466653128
हिसार हरियाणा

अमृतांशु वाजपेयी (Amritanshu Vajpayee)
फतेहगढ़ - फर्रुखाबाद, उत्तर प्रदेश
+91- 8874308090

खिलौने एवं कठपुतली

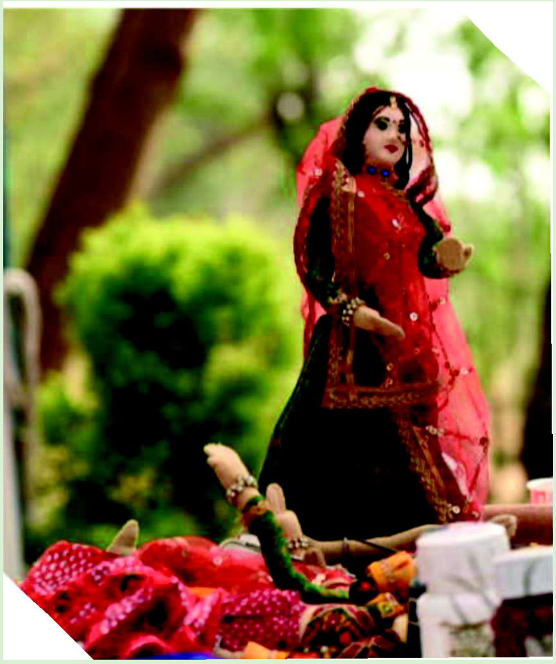

सहयोगी
डॉ. अंकिता जैन

विद्यया ऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली

श्यामला हिल्स भोपाल (म.प्र.)-462002